इकाई 14 पत्र-साहित्य

इकाई की रूपरेखा

14.0 उद्देश्य
14.1 प्रस्तावना
14.2 पत्र : एक साहित्यिक विधा
14.3 पत्र विधा की विशेषताएँ
  14.3.1 लिखित संप्रेषण
  14.3.2 निजता
  14.3.3 आत्माभिव्यक्ति
  14.3.4 तात्कालिकता
  14.3.5 सहजता
14.4 पत्र और अन्य गद्य विधाएँ
  14.4.1 पत्र और आत्मकथा
  14.4.2 पत्र और संस्मरण
  14.4.3 पत्र और डायरी
14.5 मुक्तिबोध के पत्रों का पठन
14.6 मुक्तिबोध के पत्रों का सार
14.7 मुक्तिबोध के पत्रों का विश्लेषण
  14.7.1 कथ्य
  14.7.2 भाषा शैली
14.8 सारांश
14.9 शब्दावली
14.10 बोध प्रश्नों के उत्तर

14.0 उद्देश्य

'साहित्य : विविध विधाएँ' खंड की यह दूसरी इकाई है। पहली इकाई (इकाई सं0-13) में आप डायरी विधा से परिचित हो चुके हैं। इस इकाई में हम साहित्य की एक प्रमुख विधा 'पत्र' का अध्ययन करने जा रहे हैं। इसे पढ़ने के बाद आपः

- साहित्यिक विधा के रूप में पत्र-साहित्य की विशेषताएँ बता सकेंगे,
- पत्र तथा अन्य गद्य विधाओं का अंतर स्पष्ट कर सकेंगे और
- मुक्तिबोध के पत्रों का विश्लेषण कर सकेंगे।

14.1 प्रस्तावना

खंड-3 'साहित्य : विविध विधाएँ' के अन्तर्गत हम डायरी, पत्र, रिपोर्ताज, यात्रा वृतांत, जीवनी और संस्मरण जैसी गद्य विधाओं का अध्ययन कर रहे हैं। डायरी विधा का अध्ययन आप पिछली इकाई में कर चुके हैं। इस इकाई में आप पत्र-साहित्य की विशेषताओं से परिचित होंगे।

लेखन कला के आविष्कार के साथ ही पत्र लेखन की भी शुरुआत हुई। यह कहना अतिशयोक्ति न होगी कि अपने हर काम के लिए हम पत्र का सहारा लेते हैं। स्कूल, कॉलेज या दफ्तर से छुट्टी लेनी हो, किसी दफ्तर में अर्जी देनी हो, दूर बैठे प्रिय जन को कुछ लिखना हो तो हम पत्र माध्यम का ही सहारा लेते हैं। पत्रों के इन विभिन्न प्रकारों के कारण इन्हें औपचारिक और अनौपचारिक श्रेणी में विभाजित किया जाता है। यहाँ हम उन अनौपचारिक साहित्यिक पत्रों की चर्चा करने जा रहे हैं जो साहित्यिक दृष्टि से मूल्यवान हों।

सबसे पहले हमने यह स्पष्ट किया है कि पत्र क्या है और पत्र साहित्यिक विधा किस प्रकार है? यह तय होते ही कि आज पत्र साहित्यिक विधा बन चुकी है, हमने पत्र विधा की विशेषताओं पर विचार किया है; जैसे, यह लिखित संप्रेषण है। इसमें निजता होती है। इसमें व्यक्ति अपने आपको अभिव्यक्त करता है। तात्कालिकता भी पत्र की महत्वपूर्ण विशेषता है। इसमें तुरंत सोचा हुआ लिखा जाता है। मन में जो बात आई लिख दो। इसीलिए पत्र के कथ्य और शिल्प में सहजता होती है। कभी कभी आपको इसमें कलात्मकता की कमी भी महसूस हो सकती है।

पत्र साहित्य के इन गुणों पर विचार करने के बाद हमने मुक्तिबोध के दो पत्रों के विश्लेषित करने का प्रयास किया है। ये दोनों पत्र मुक्तिबोध ने नेमिचन्द्र जैन को लिखे हैं। मुक्तिबोध और नेमिचन्द्र जैन हिंदी के वरिष्ठ और समकालीन साहित्यकार हैं। दोनों ही 'तारसप्तक' काव्य संग्रह के कवि हैं। सन् 1943 में अज्ञेय के सम्पादन में तार-सप्तक का प्रकाशन हुआ। मुक्तिबोध और नेमिचन्द्र जैन दोनों ने ही आलोचनाएँ भी लिखी हैं। जो दो पत्र इस इकाई में बतौर पाठ प्रस्तुत किए गए हैं उन्हें पढ़ने से भी यह पता चलता है कि दोनों रचनाकार आपस में कितने जुड़े हुए थे और उनमें कितनी अंतरंगता थी। इन दोनों पत्रों में एक अच्छे साहित्यिक पत्र के गुण मौजूद है। आप इसे ध्यान से पढ़ें और समझने का प्रयास करें। हमने इसे विश्लेषित कर आपको समझाने का प्रयास किया है। फिर भी कुछ शंकाएँ आपके मन में रह जाएँ तो आप अपने अध्ययन केंद्र के परामर्शदाता से अपनी शंका का समाधान कर सकते हैं।

पाठ पढ़ने के लिए संकेत

पाठ का वाचन करते समय आप कठिन शब्दों का अर्थ शब्दावली (भाग 14.9) में देख सकते हैं। यदि कोई कठिन शब्द का अर्थ न मिले तो शब्दकोश की सहायता लीजिए।

14.2 पत्र : एक साहित्यिक विधा

पत्र गद्य साहित्य की महत्वपूर्ण विधा है। इसमें दो अलग-अलग जगह पर रहने वाले व्यक्ति लिखित भाषा के माध्यम से संप्रेषण करते हैं। दो व्यक्तियों के संप्रेषण में वाचिक भाषा का प्रयोग होता है। यह वाचिक भाषा जब लिखित रूप में आ जाए, तो पत्र इसका सबसे समर्थ वाहक बनता है। दूसरे शब्दों में पत्र किसी के पास भेजा गया लिखित संदेश है। इस दृष्टि से देखा जाए तो हम देखते हैं कि पत्र में :

(i) एक लेखक होता है और एक पाठक होता है।
(ii) पाठक लेखक और लेखक पाठक बन जाता है। अर्थात् इसमें तीसरा कोई व्यक्ति नहीं होता।
(iii) इस माध्यम में दोनों व्यक्तियों को एक भाषा का जानकार एवं साक्षर होना आवश्यक है। अर्थात् **पत्र साक्षर व्यक्तियों के संप्रेषण का माध्यम है।**

जैसा कि हम पिछली इकाई में पढ़ चुके हैं कि कथेतर गद्य-विधाओं में कल्पना का सहारा नहीं लिया जाता, वरन् इनमें वास्तविक घटनाओं और अनुभवों का वर्णन किया जाता है। पत्र किसी काल्पनिक तथा अमूर्त व्यक्ति को संबोधित नहीं होता वरन् वास्तविक व्यक्ति को संबोधित होता है। पत्र पाने वाला जब पत्र का जबाब देता है तो वह भी पत्र लेखक बन जाता है। उसमें भी सर्जनात्मक सामर्थ्य होती है। पत्र की यह विशेषता किसी भी अन्य गद्य विधा में नहीं मिलती। पत्र-साहित्य के लेखक-पाठक में समानता का आधार होता है।

पत्र दो साक्षर व्यक्तियों का लिखित संवाद है। संवाद में दोनों व्यक्ति एक दूसरे को संप्रेषित कर रहे होते हैं। इस सामग्री को हम मोटे तौर पर तीन भागों में बाँट सकते हैं :

(i) तथ्यों का संप्रेषण,
(ii) तथ्यों पर व्यक्त की जा रही मानसिक प्रतिक्रियाओं का संप्रेषण, और
(iii) स्वयं का संप्रेषण अर्थात् आत्माभिव्यक्ति।

जिन पत्रों में हम एक-दूसरे को तथ्यों का संप्रेषण करते हैं उन्हें हम औपचारिक पत्रों की श्रेणी में रख सकते हैं। दूकानदार द्वारा अपने ग्राहक को किसी पुस्तक की कीमत की सूचना देने से लेकर सरकार को जनता की समस्याओं से अवगत कराने तक के सभी पत्रों को हम औपचारिक पत्रों की श्रेणी में गिनते हैं। इनका एक निश्चित विधान होता है। उसी के अनुरूप सभी लोग आवश्यकतानुसार पत्र-

व्यवहार करते हैं। इस इकाई में हम ऐसे पत्रों का अध्ययन नहीं करेंगे। ऐसे पत्र साहित्यिक पत्रों की श्रेणी में नहीं आते।

जिन पत्रों में पत्र-लेखक किसी तथ्य विशेष पर अपनी निजी मानसिक प्रतिक्रिया व्यक्त करता है, या अपने दुःख दर्द की कहानी सुनाता है, अपने आपको अभिव्यक्त करके प्रसन्न होता है, उन अनौपचारिक पत्रों का अध्ययन ही हम इस इकाई में करेंगे। औपचारिक और अनौपचारिक पत्रों को हम इस तरह से पहचान सकेंगे :

- औपचारिक पत्र निश्चित परिपाटी में लिखे हुए होते हैं, जबकि अनौपचारिक पत्रों की ऐसी कोई निश्चित परिपाटी नहीं होती।
- औपचारिक पत्र सोद्देश्य होते हैं। उनका उद्देश्य निश्चित तथ्यों और घटनाओं का संप्रेषण करना होता है।
- औपचारिक पत्र में पाने वाले व्यक्ति का निजी व्यक्तित्व महत्वपूर्ण नहीं होता। उस स्थान पर बैठे हुए किसी भी व्यक्ति के लिए यह पत्र हो सकता है। जबकि अनौपचापरिक पत्रों में वह व्यक्ति महत्वपूर्ण होता है, जिसे पत्र लिखा जाना है। यदि उसके स्थान पर किसी और को पत्र लिखना है तो पत्र की सारी सामग्री बदल जायेगी। यह निजता ही उसे अनौपचारिक पत्र बनाती है और इसी से यह पत्र साहित्य की श्रेणी में आता है।

पत्र आत्माभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम है। हालांकि पत्र का आरंभ लेखन के आविष्कार के साथ ही हुआ परंतु विधा के रूप में साहित्य से यह आधुनिक काल में ही जुड़ा। साहित्यिक दृष्टि से मूल्यवान पत्र को ही साहित्यिक पत्र माना जाता है। इस प्रकार के पत्र से रचनाकार के व्यक्तित्व, उसकी रचना, रचना-प्रक्रिया आदि का उद्घाटन होता है। सामान्य सूचना देने वाले पत्र साहित्यिक पत्र की कोटि में नहीं आएंगे। साहित्यिक सवालों को उठाने वाले पत्र ही साहित्यिक पत्र कहे जाएंगे।

सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक जीवन के क्षेत्र में महत्वपूर्ण कार्य करने वाले व्यक्तियों के बारे में सभी व्यक्तियों की जिज्ञासा रहती है। हम उनके बारे में ज्यादा से ज्यादा जानना चाहते हैं। इन क्षेत्रों में उनके किये गये कार्यों को हम जानते हैं। उनके व्यक्तित्व का सार्वजनिक पक्ष हमारे सामने उद्घाटित हो चुका होता है। हम यह भी जानना चाहते हैं कि उनका निजी, एकांत, गोपनीय जीवन कैसा रहा है? किसी घटना विशेष पर उनकी तात्कालिक प्रतिक्रिया कैसी रही है? इसके लिए हम महापुरुषों के संस्मरण पढ़ते हैं, उनकी डायरी और आत्मकथा का अध्ययन करते है। इसी जिज्ञासा से हम उनका पत्र-व्यवहार भी पढ़ते हैं। इन पत्रों में उनका मानसिक व्यक्तित्व झांकता है। इसी कारण उनका पत्र-व्यवहार प्रकाशित होता है। महात्मा गांधी, अल्बर्ट आइंस्टाईन, प्रेमचंद और रवीन्द्रनाथ ठाकुर के पत्र बहुत चाव से पढ़े जाते हैं।

पत्र-साहित्य हिंदी गद्य की नवीनतम गद्य विधाओं में से एक है। जैसे-जैसे पत्र साहित्य का महत्व स्थापित हो रहा है वैसे-वैसे महत्वपूर्ण रचनाकारों के पत्र प्रकाशित होने लगे हैं। हिंदी साहित्य में कई हिंदी साहित्यकारों जैसे महावीर प्रसाद द्विवेदी, बनारसीदास चतुर्वेदी, माखनलाल चतुर्वेदी, निराला, उग्र, बच्चन, यशपाल, दिनकर, हजारी प्रसाद द्विवेदी, नागार्जुन आदि रचनाकारों के पत्र प्रकाशित हो चुके हैं। इन पत्रों से साहित्य और सम्पूर्ण जीवन के बारे में इनके दृष्टिकोण को समझने में मदद मिली है।

इस इकाई में हमने श्री नेमिचन्द्र जैन के नाम मुक्तिबोध के पत्र के जरिए पत्र साहित्य को समझने का प्रयास किया है। सर्वश्री नेमिचन्द्र जैन और मुक्तिबोध हिंदी के वरिष्ठ रचनाकार हैं। इन पत्रों में मुक्तिबोध ने साहित्य और जीवन के बारे में अपना दृष्टिकोण सामने रखा है। इसीलिए यह एक साहित्यिक पत्र है। इस पर हम आगे विस्तार से चर्चा करेंगे।

14.3 पत्र विधा की विशेषताएँ

पत्र एक सोद्देश्य संप्रेषण है। हम जानबूझकर, एक योजना के अंतर्गत, कुछ बातों को संप्रेषित करने के लिए पत्र लिखते हैं। हम अनायास, निरुद्देश्य पत्र नहीं लिखते। हम किसी को 'कुछ' कहना चाहते हैं, कुछ 'बताना' चाहते हैं। जिसे हमें बताना है, वह व्यक्ति हमारे पास नहीं है। वह हमसे दूर है। यदि वह पास है, तब भी हमको लगता है कि हम उसे अपनी बात अच्छी तरह से नहीं कह पायेंगे। सामने वाला

व्यक्ति अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करके हमारी एकाग्रता भंग कर देगा और इस कारण हमारा 'कथ्य' पूर्णतः संप्रेषित नहीं हो पायेगा। इसलिए हम दूरस्थ मित्र को मानसिक रूप से अपने सामने खड़ा करते हैं और तब उसे संबोधित करते हुए अपनी बात कहते हैं। यह एक विशेष प्रकार का संप्रेषण है। आइये हम एक-एक करके इस विधा की बारीकियों को समझने का प्रयास करें।

14.3.1 लिखित संप्रेषण

पत्र लिखित संप्रेषण का माध्यम है। यह साक्षर व्यक्तियों के संप्रेषण का माध्यम है। निरक्षर व्यक्ति पत्र-व्यवहार नहीं कर सकते। पत्र लिखने वाला और पाने वाला दोनों एक ही समान भाषा के जानकार होने चाहिए। यदि मुझे फ्रेंच नहीं आती तो कोई व्यक्ति फ्रेंच में पत्र लिखकर मुझसे संवाद नहीं कर सकता। दोनों के पत्र-व्यवहार की भाषा एक ही होनी चाहिए। फिर, पत्र दूरस्थ व्यक्तियों के संप्रेषण का माध्यम है। यदि कोई व्यक्ति आपके सामने बैठा है तों आप मौखिक रूप से उससे बातचीत कर सकते हैं लेकिन मौखिक बातचीत की सीमा से बाहर रहने वाले व्यक्ति से संवाद स्थापित करने के लिए हमें पत्र की आवश्यकता पड़ती है। ज्यों ही हम लिखित माध्यम को चुनते हैं, संवाद में एक विशेष प्रकार की औपचारिकता आ जाती है। लिखित और मौखिक संप्रेषण के अंतर का अध्ययन आप पिछली इकाइयों में कर चुके हैं। यह अवश्य होता है कि दो समानधर्मा मित्र अपने पत्र-व्यवहार में भरसक इस औपचारिकता को कम करने की कोशिश करते हैं। मुक्तिबोध ने भी ऐसा किया है। इसमें मुक्तिबोध काफी हद तक सफल भी हुए हैं। तब भी, लिखित शब्द की अपनी मर्यादा होती है और यह मर्यादा पत्र-व्यवहार को पूर्णतः अनौपचारिक नहीं होने देती।

सामान्यतः लेखन की किसी भी विधा में लेखक महत्वपूर्ण होता है। वह अपने अनुभव, अपनी सोच, अपना चिंतन व्यक्त करता है। उस लेखन को पढ़ने वाला पाठक अदृश्य होता है, अनिश्चित होता है। पत्रों में प्राप्तकर्ता वास्तविक व्यक्ति होता है। आप एक विशेष व्यक्ति को संबोधित करते हैं। यह विशेष व्यक्ति आपके पत्र में 'कथ्य' को प्रभावित करता है, यहाँ तक कि वह उस 'कथ्य' को निश्चित करता है। मुक्तिबोध यदि नेमिचंद्र जैन को पत्र न लिखकर अज्ञेय या रामविलास शर्मा को लिखते, तो पत्र का मज़मून ही बदल जाता।

14.3.2 निजता

पत्र में दो व्यक्ति परस्पर संवाद की स्थिति में होते हैं। ये व्यक्ति आपस में साझा अनुभव के साक्षी होते हैं। उनके जीवन के कुछ बिंदु, कुछ समस्याएं समान होती हैं और वे उस आधार से परस्पर पत्र-व्यवहार करते हैं। यदि उनमें कुछ भी एक समान न हो, तो उनमें किसी भी प्रकार के संप्रेषण की संभावना नहीं होती और तब उनमें किसी प्रकार का पत्र-व्यवहार भी नहीं होता। इसके साथ ही वे किसी सार्वजनिक अनुभव का आदान-प्रदान भी नहीं करते। पत्रों से सार्वजनिक जीवन का जिक्र हो सकता है, परंतु उसकी सार्वजनिक व्याख्या नहीं होती। उस सार्वजनिक जीवन के प्रति लेखक की निजी राय क्या है यह वह पत्र में प्रकट कर सकता है और प्राप्तकर्ता से उम्मीद करता है वह या तो उसकी पुष्टि करे या खंडन करे।

यदि आप मुक्तिबोध के पत्रों को देखें तो इनमें कई बातें नेमिचंद्र जैन और मुक्तिबोध में समान हैं। उदाहरण के लिए दोनों लेखक हैं, कविताएं लिखते हैं और एक ही तरह के सृजन कर्म से जुड़े होने के कारण उनकी वैचारिक दृष्टि में भी काफी बिंदु समान हैं।

पत्र इकतरफा संप्रेषण नहीं होता। पत्र-व्यवहार में साझा सर्जनशीलता अभिव्यक्त होती है। एक व्यक्ति पत्र लिखता है दूसरा व्यक्ति पढ़ता है। वह उस पत्र को पढ़कर पत्र लिखने बैठ जाता है और इस तरह यह क्रम चलता रहता है। जाहिर है कि इसमें लेखक पाठक और पाठक लेखक बन जाता है। दोनों इस दोहरी भूमिका में आ जाते हैं। उनकी यह बदली हुई भूमिका किसी अन्य गद्य विधा में नहीं होती। कविता, कहानी या नाटक हो या संस्मरण, रिपोतार्ज या आत्मकथा सभी में लेखक लेखक ही रहता है और पाठक पाठक ही रहता है। पाठक कभी भी लेखक नहीं बनता।

14.3.3 आत्माभिव्यक्ति

पत्र में लेखक किसी विशेष विषय का वर्णन नहीं करता। वह आत्माभिव्यक्ति करता है। वह एक से अधिक तथ्यों पर अपनी मानसिक प्रतिक्रिया व्यक्त करता जाता है। लिखने के दौरान जो भाव तरंगे, उठीं, मन में जो विचार आया, उन्हें वह उसी रूप में व्यक्त करता जाता है। किसी गंभीर तात्विक

विषय का उल्लेख भी लेखक बड़े सामान्य और सहज ढंग से कर देता है। यहां लेखक का चिंतन महत्वपूर्ण होता है। ज़ाहिर है कि इसमें स्फुट चिंतन व्यक्त होता है, विस्तार से व्याख्या नहीं होती, चिंतन की पूर्णता नहीं होती, निष्कर्ष भी नहीं होता। अनेक बातों को लेखक छोड़ देता है। केवल प्रासंगिक बातों पर प्रकाश डालकर वह पत्र बंद कर देता है। कुछ बातें वह अगले पत्र के लिए शेष रख लेता है। कुछ बातें वह प्रत्युत्तर मिलने के बाद लिखता है।

किसी पत्र में लेखक भूमिका नहीं लिखता। वह सीधे मूल बात से पत्र की शुरूआत करता है। उसे मालूम है कि पत्र को पाने वाला व्यक्ति कौन है? वह कितना जानकार है? उसे सब बात समझाने की ज़रूरत नहीं है। वह संदर्भ से आगे पीछे की बातें समझ सकता है। उनके बीच यह कोई पहला पत्र नहीं है। कई पत्र आ-जा चुके हैं। कुछ बातें आमने-सामने घटित हो चुकी हैं। दोनों को पता है। इसलिए संक्षेप में काम चल सकता है। गंभीर से गंभीर बात को भी लेखक तुरंत लिखकर आगे बढ़ता है। यहां यह भी ध्यान में रखना चाहिए कि पत्र में बात आगे बढ़ती है। कथ्य का विकास होता है। कथ्य का विकास लेखक-पाठक के जीवन के विकास के साथ जुड़ा हुआ होता है। सामाजिक-वैयक्तिक जीवन का प्रत्येक परिवर्तन पत्रों में अभिव्यक्ति पाता है। किसी लेखक के संपूर्ण पत्र-व्यवहार में अभिव्यक्ति-कौशल के इस विकास को देख सकते हैं।

14.3.4 तात्कालिकता

पत्र पढ़ने वाला व्यक्ति दूर होता है। वहाँ तक पत्र पहुंचने में समय लगता है। जब तक पाने वाले व्यक्ति के पास पत्र पहुंचे, तब तक लिखने वाले व्यक्ति का मन बदल सकता है। वह भूल भी सकता है। जवाब देने वाला यह मानकर चलता है कि आपकी बातें तो आपको याद है। आपके सामने पत्र है। इसलिए वह उसी पर अपनी प्रतिक्रिया लिख देता है। दोनों तरफ से जो अभिव्यक्त होता है, वह उन दोनों की तात्कालिक प्रतिक्रिया होती है। घटना की प्रतिक्रिया पहला व्यक्ति करता है, पाने वाले उसकी प्रतिक्रिया पर प्रतिक्रिया करता है। इसमें गलतफहमी की गुंजाइश हो सकती है। तात्कालिक प्रतिक्रिया प्रकट करने के बाद भी चिंतन चलता है। हम उस तात्कालिक मानसिकता से उबर सकते हैं। उस आवेग को स्थगित कर सकते हैं। लिखा हुआ अक्षर तो बदल नहीं सकता, परंतु लिखने वाला स्वयं बदल सकता है। इसलिए अगला पत्र कभी-कभी पिछले पत्र को निरस्त भी कर सकता है। कभी-कभी बात आगे बढ़ती है और फिर टूट जाती है। टूटी हुई बात फिर कभी जुड़ सकती है। यह तात्कालिकता की सीमा है।

इन कारणों से पत्रों में हुई बातों को लेखक का निष्कर्ष नहीं मान सकते। डायरी की भाँति पत्रों में व्यक्त किये गये विचार भी लेखक के प्रतिनिधि विचार नहीं माने जा सकते। ये उसकी तात्कालिक प्रतिक्रियाएं हैं, तथा इन्हें इसी रूप में समझना चाहिए।

14.3.5 सहजता

सहजता पत्र का आवश्यक गुण है। सहज संप्रेषण पत्र की सफलता का आधार है। इसीलिए पत्र की भाषा-शैली भी सहज होती है। ध्यान रहे, यहाँ हम साहित्यिक पत्रों की बात कर रहे हैं। पत्रों में लेखक को हमेशा इस बात का ध्यान रखना होता है कि उसकी भावनाओं, विचारों और दृष्टिकोण को सही ढंग से पत्र प्राप्तकर्ता समझ ले। पत्र लिखते समय लेखक भाषा और शिल्प की कलात्मकता के प्रति सचेत नहीं रहता। पत्र में भाषागत कलात्मकता तथा सौंदर्य भी लेखक की सहज अभिव्यक्ति का हिस्सा बनकर ही आता है। आगे जब आप मुक्तिबोध का पत्र पढ़ेंगे तब यह बात और स्पष्ट रूप से आप समझ सकेंगे।

14.4 पत्र और अन्य गद्य विधाएँ

जैसा कि हम पहले भी बता चुके हैं कि पत्र व्यक्ति मन की अभिव्यक्ति है। इसमें लेखक का आत्मसाक्ष्य निहित होता है। इसमें लेखक अपने मन को खोल कर रख देता है। पत्र में निजता के साथ आत्मीयता भी होती है।

आत्मकथा, डायरी, संस्मरण और यात्रा वृत्तांत पत्र-साहित्य से मिलती जुलती गद्य विधाएँ हैं। इन सब गद्य विधाओं में लेखक अपनी बात कहता है। आत्म-प्रकाशन इन गद्य विधाओं का गुण है। आत्म-प्रकाशन की समानता के बावजूद पत्र का अलग शिल्प है। इसका स्वरूप भी अलग है। पत्र ही एकमात्र

ऐसी साहित्यिक विधा है जिसमें लेखक और पाठक एक भूमि पर खड़े होते हैं। इसमें लेखक और पाठक की भूमिका बदलती रहती है। इसी तरह पत्र-लेखन का सिलसिला जारी रहता है।

14.4.1 पत्र और आत्मकथा

पत्र और आत्मकथा एक दूसरे के समीप होते हुए भी गद्य की स्वतंत्र विधाएँ हैं। दोनों में समानता यह है कि दोनों विधाओं में लेखक अपने बारे में खुलकर लिखता है। परंतु पत्र में जहाँ तात्कालिकता होती है वहीं आत्मकथा व्यक्ति की जीये हुए जीवन का ब्यौरा होता है। आत्मकथा व्यक्ति के निजी जीवन का लगातार प्रस्तुत किया गया विवरण है। पत्र में जीवन का एक क्षण प्रस्तुत होता है। एक समय में पत्र लेखक जो सोचता है वह लिख देता है। अतः आत्मकथा के समान पत्र में व्यवस्था भी नहीं होती। आत्मकथा में सब कुछ सहेजा-संवारा होता है जबकि पत्र में थोड़ी 'अव्यवस्था' होती है। लेखक कभी एक बात लिखता है तो कभी दूसरी बात। मुक्तिबोध के जिन दो पत्रों को हमने बतौर पाठ संकलित किया है, उन्हें ध्यान से पढ़ें तो यह बात और भी स्पष्ट हो जाएगी।

14.4.2 पत्र और संस्मरण

यह सही है कि पत्र और संस्मरण, दोनों विधाओं में दो व्यक्तियों के साझा अनुभवों का वर्णन होता है । फर्क सिर्फ यह है कि संस्मरण में इन दो से अलग कोई तीसरा व्यक्ति पाठक होता है। इसमें लेखक > विषय (अन्य व्यक्ति) > पाठक यह क्रम रहता है। पत्र में लेखक > पाठक, पाठक > लेखक बस ये दो ही बिंदु होते हैं। ये दोनों ही अपने आपसी अनुभवों को संप्रेषित करते रहते हैं।

संस्मरण में बीते हुए अनुभवों का बयान होता है, जबकि पत्र लेखन तात्कालिक अनुभवों की तात्कालिक प्रतिक्रिया है। पत्र लेखन में भी बीते हुए अनुभवों का उपयोग हो सकता है। लेकिन यह उसकी मुख्य विषय-वस्तु नहीं होती। मुख्य विषय-वस्तु वर्तमान होती है। लेखक उसी पर टिप्पणी करता है। संस्मरण में अतीत प्रमुख विषय होता है। उनसे सुखी या दुःखी हुआ जा सकता है। उनमें अब कोई परिवर्तन संभव नहीं है। वे अनुभव अपनी अंतिम परिणति तक पहुँच चुके हैं। जबकि पत्र लेखन में वर्णित कथ्य में बाद में फेरबदल किया जा सकता है। पत्र लेखन के द्वारा घटनाओं-परिस्थितियों को बदला जा सकता है। उन्हें नई दिशा दी जा सकती है। अंतः पत्र में वर्तमान प्रमुख होता है और संस्मरण में अतीत।

14.4.3 पत्र और डायरी

शिल्प की दृष्टि से पत्र निराली विधा है। इसका किसी अन्य विधा से कोई मेल नहीं है। तब भी, कुछ बातों में पत्र और डायरी में समानताएं भी हैं। उदाहरणार्थ दोनों तात्कालिक लेखन है। एक पत्र कई दिनों तक नहीं लिखा जाता। आम तौर से एक पत्र एक ही बैठक में लिख लिया जाता है। इसी तरह डायरी का लेखन भी उसी दिन हो जाता है। वैसे यह निश्चित तो नहीं है, तब भी सामान्यतः डायरी दिन बीत जाने के बाद लिखी जाती है, जबकि पत्र लेखन का कोई निश्चित समय नहीं होता। जब भी आपको पत्र मिला या मन में इच्छा जागी, आप पत्र लिखने बैठ गये। यह अवश्य है कि पत्र लेखन एक बैठक का कार्य है। डायरी का लेखक स्व्यं ही पाठक होता है, जबकि पत्र का एक अन्य व्यक्ति पाठक होता है। यह अन्य व्यक्ति पत्र की विषय-वस्तु को प्रभावित करता है। पत्र की भाषा को संयमित और मर्यादित करता है। डायरी जहाँ न कहे गये अनुभवों को व्यक्त करती है, वहाँ पत्र दोनों व्यक्तियों के साझा अनुभवों को प्रकट करता है। इसमें भी सार्वजनिक अनुभवों की अभिव्यक्ति नहीं होती। पत्र में गोपनीय सूचना हो भी सकती है, नहीं भी हो सकती है। यह अवश्य है कि उस सूचना का संबंध दोनों व्यक्तियों से होता है। यदि पाठक (पत्र प्राप्तकर्ता) गणित या भौतिकी का जानकार नहीं है, तो उसे पत्र में इन विषयों की बारीकियां समझाना मूर्खता है। आप डायरी में अपने लिये ऐसी बारीकियाँ चाहें, तो लिख सकते हैं। पत्र में प्राप्तकर्ता के अनुभवों की सीमा का भी ध्यान रखना पड़ता है।

बोध प्रश्न -1

1. औपचारिक पत्र और अनौपचारिक पत्र के बीच क्या अंतर है? (पाँच पंक्तियों में उत्तर दीजिए)

.....

.....

.....

.....

.....

2. सामान्य पत्र और साहित्यिक पत्र में क्या अंतर होता है ? (सही विकल्प पर ✓ का निशान लगाइए)

(क) सामान्य पत्र में और साहित्यिक पत्र में कोई अंतर नहीं होता है।

(ख) सामान्य पत्र में केवल सूचनाएँ होती हैं जबकि साहित्यिक पत्र में साहित्य और जीवन के प्रति लेखक का अपना दृष्टिकोण अभिव्यक्त होता है।

(ग) सामान्य पत्र में लेखक का निजी जीवन अभिव्यक्त होता है जबकि साहित्यिक पत्र में ऐसा नहीं होता।

(घ) सामान्य पत्र में लेखक सहज होता है, साहित्यिक पत्र में वह सहज नहीं रहता।

3. पत्र विधा की विशेषताओं का संक्षेप में उल्लेख कीजिए। (दस पंक्तियों में उत्तर दीजिए)

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

4. पत्र विधा से मिलती जुलती गद्य विधाओं का उल्लेख कीजिए। (पाँच पंक्तियों में उत्तर दीजिए)

.....

.....

.....

.....

.....

5. डायरी और पत्र में क्या समानता है? (पाँच पंक्तियों में उत्तर दीजिए)

.....

.....

.....

.....

.....

14.5 मुक्तिबोध के पत्रों का पठन

सरस्वती प्रेस,
बनारस कैंट
26.10.45
प्रिय नेमि बाबू,

आपका पत्र नहीं। समय का अभाव नित्य से अधिक ही होगा। पर याद आपकी आती रहती है। आजकल धूप बहुत अच्छी खिलती है और **मन तैर-तैर उठता है**, और आपकी याद भी इसी सुनहले रास्ते से उतर आया करती है।

गो मैं यह सोचता हूँ कि यह सब ग़लत है। दिन के बँधे हुए कार्य को अधिक बाँधकर करने के पक्ष में रहते हुए भी कामचोरी से दिली मुहब्बत टूट नहीं पाती। मैं मानता हूँ कि कर्त्तव्य ही सब कुछ है। पर उसके न करने का उत्तरदायित्व मानो मैं अपने ऊपर नहीं लेना चाहता। क्या जरूरी है कि, कर्त्तव्य किया ही जाय, और उस समय आने वाली आपकी याद को बाहर ही खड़ा रख मन के दरवाज़े को बंद कर दिया जाय। कर्त्तव्य के फ़लसफ़े की बात ज्यादा समझ में नहीं आती।

इसी कर्त्तव्य ने तो लोगों को पंगु कर दिया है, उनके **हृदय के पंख** तोड़कर उसे अधिक सामान्य बना दिया है। **सरदी की पारदर्शिनी, हल्की-हल्की चोटें करने वाली यह धूप और उसका ऊष्ण स्पर्श मानो मुझे जगा देता है।** मन दैनिक नींद से जाग उठता है। वृक्षों के **पत्र-संभार*** पर फलकर उनके गाढ़े हरियाले अंतराल में छाया-प्रकाश उत्पन्न करने वाली यह धूप मन में सपने जगा देती है। कोई विलास-स्वप्न नहीं वरन् विजय-स्वप्न। जिन्हें देख लें पुराने मकान की जीर्ण* मुंडेर पर बैठकर दूसरे के आँगन में ताकने वाले लोग - कर्त्तव्य के पुराने मुहल्ले के बाशिंदे।

सचमुच अब सारे कर्त्तव्य से आज़ादी चाहता हूँ। चाहता हूँ मात्र कार्य, अपने अनुकूल। यह नहीं कि Petit-bourgeois* कर्त्तव्य चलते ही चले जायँ और मैं उसमें फँसता हुआ ही चला जाऊँ।

अब मैं ज़िंदगी के प्रति उदास नहीं हूँ। पहले उसकी शिकायत थी। अब तो उससे तक़ाजा है, माँग है।

रोज़ लिखने की सोचता हूँ। लिखता भी हूँ, पर बहुत थोड़ा। आप विश्वास नहीं करेंगे, एक कविता को दुरुस्त करने के लिए छह घंटे लगते हैं। मैंने कई सुधार भी दी हैं। कई तो सुधारने की प्रक्रिया में परिवर्तित हो गयी हैं। पता नहीं कब तक मैं कविताओं को यों सुधारता बैठूँगा। आपसे बड़ी-बड़ी शिकायतें हैं। पर अभी इस समय नहीं। बाहर बहुत नरम धूप खिली है और इस समय सोचने का कोई उत्साह नहीं। यदि आप यहाँ होते तो आपको पकड़कर मैं रेस्तराँ में ले जाता और काम की और अपनी ऐसी-तैसी करता।

यह बतलाइए कि आपने इधर कुछ लिखा? लेकिन फ़ुरसत तो आपको भी नहीं मिलती होगी, जो भी आपका समय खूब मज़े में कट जाता होगा।

वाक़ई अब बनारस छोड़ने की इच्छा हो रही है। दो दिन के लिए ही सही। कुछ जरूरी मालूम होता है। मैंने भी शादी क्या कर ली, अपने को धोखा दे दिया, आज़ादी का मुहताज़ हो गया। और अब शक्ति होते हुए भी शक्तिहीन और सामर्थ्यहीन मालूम होता हूँ, खुद को ही बेवकूफ-सा लगने लगता हूँ। घर-गिरस्ती भी एक बला है। सचमुच उज्जैन में मैं काफी आज़ाद था (**जो भी यहाँ सुखी अधिक हैं**) ईश्वर करे कोई लेखक अब शादी न करे, और करे तो घर-गिरस्ती के चक्कर से खुदा उसे मुआफ़ रखे। घर-गिरस्ती भी एक बला है, जिसके दो सींग हैं, जो गधे के होते हैं। बाल-बच्चेदार आदमी सोलह आना गधा होता है। इसमें शक नहीं।

दुनिया के करोड़ों गधों में से मैं भी एक हो गया हूँ, लेकिन अभी नया हूँ। दुलत्तियाँ झाड़ देता हूँ। और अभी पूरे तौर से गधे का फ़लसफ़ा - उसका बौना आदर्शवाद - आत्मसात् नहीं कर सका हूँ। पर इससे तकलीफ़ तो होती ही है।

डॉक्टर साहब के क्या हाल हैं? उनसे भेंट होती है? मैं उन्हें अभी तक लिख नहीं सका। वे नाराज़ तो होंगे ही।

मेरे कविता-संग्रह की भूमिका के बारे में क्या सोचा? आप क्यों नहीं लिख देते? अब तक बड़े-बड़े लोग ही लिखा करते हैं, अब यह बात भी सही। उत्तर जल्दी दीजिए। पुस्तक के नाम-वाम के चक्कर में नहीं पड़ता। कुछ तो भी रख दूँगा। पर छायावादी नाम नहीं रक्खूँगा।

मेहनत करूँ तो लेखन से पैसे मिल सकते हैं। इसमें संदेह नहीं। पर साहित्यिक श्रम जितना अधिक आवश्यक है उतना ही अभाव है समय का। दुनिया के सारे कार्यों से निवृत्त हो, थकी हुई पीठ और बोझिल मस्तिष्क ले, टिम-टिमाते कंदील के धुँधले प्रकाश में क़लम चलने तो लगती है पर ख़ुद को कोसती हुई। इस मेहनत को देखते हुए, मुझे हर कविता के पाँच रुपये प्रकाशक से charge* करना चाहिए।

पर अब साहित्यिक श्रम मुझे करने ही पड़ेंगे। हिंदी सुधारने की कोशिश शुरू हो गयी है। छोटी-सी phrase, कोई चुस्त **ज़बान-बंदी*** झट नोट कर लिया करता हूँ, बिल्कुल शॉ के **लेडी ऑफ़ दि डार्क** के शेक्सपियर की भाँति।

इसके पहले, मैं हिंदी के साहित्यिक प्रयासों के सिवाय, कभी भी लिखा नहीं करता था। मेरे अत्यंत आत्मीय विचार मराठी या अंग्रेज़ी में निकलते थे, जिसका **तर्जुमा,** यदि अवसर हो, तो हिंदी में हो जाता था। इसीलिए जानबूझकर यह पत्र हिंदी में लिख रहा हूँ। मेरा ख्याल है कि मेरी भाषा सुंदर न भी हो सके वह सशक्त होकर रहेगी, क्योंकि उसके पीछे अंदर का ज़ोर रहेगा। बतलाइए, क्या मेरा सोचना ग़लत है। इसके बारे में आप ज़रूर लिखिए। मुझे साज-सँवार की प्रतिष्ठित बोली पसंद नहीं। चाहता हूँ कि इसके विषय में आप मत-प्रदान करें। क्या मैं अपनी हिंदी सुधार सकता हूँ? उसे सक्षम, सप्राण और अर्थ-दीप्त कर सकता हूँ?

पत्र आप लम्बा लिखें; देखिए, मै आपके बारे में कुछ भी नहीं जान रहा हूँ, और अभी साल कटना है जिसके बाद आप मुझे मिलेंगे। यह भी लिखें कि पत्र की भाषा कैसी है। और...और...सब लिखें। मेरे लिए किसी भी तरह से दो घंटे निकाल लें, शीघ्र ही।

शांता स्कूल जाया करती है। शायद मैं उसे अब अधिक प्यार करता हूँ। कुछ, आप ही आप, अंदर से तब्दीली हो गयी है। मुझमें और उसमें भी। परंतु, मेरी आँखों के सामने घर-गिरस्ती को देखकर काले सपने आया करते हैं। मैं वज़न सम्हाल नहीं पाया, और हर महीने की बीस तारीख के बाद दिवालियापन सताता रहता है - क्रुद्ध प्रेत-सा। और अब सरदी आ गयी है।

बबन साहब ने स्कूल छोड़ दिया है, और वह वकालत करने लगे हैं। दादा (हमारे पिता) के पत्र नित्य आते रहते हैं। बड़े ही विह्वल पत्र। सचमुच वात्सल्य भी आपत्ति है। ईश्वर करे, मुझे न सताये यह रोग। बेरूख़ी सबसे अच्छी। श्रीपत रायज़ी जयपुर गए हुए हैं, उन्तीस तक वापस आ जायेंगे। अज्ञेयजी को एक पत्र लिखा था अर्थहीन nonsensical* पत्र। जिसका उत्तर था कि मैं कलकत्ते पर जाने-वाली ट्रेन पर उन्हें मिलूँ। मिला था। देख भर लिया। बातचीत होती ही क्या!

श्रीमती रेखाबाई की क्या स्थिति है? और आगे का कार्यक्रम क्या? क्या ही विवेक-बाह्य (irrational)* **तृषा** है कि जिन-जिन लोगों से आपको लगाव है उन्हें मैं भी जानूँ-पहचानूँ और निकट आऊँ। यही कारण है कि भारत भूषणजी के प्रति नित्य से अधिक उत्सुक रहता हूँ।

आजकल कुछ उर्दू कविताएँ मन में ठहर गयी हैं। उसके कुछ शेर...

फ़क़ीराना* आये सदा कर चले
मियाँ, खुश रहो हम दुआ कर चले
व' क्या चीज़ से दिल उठाकर चले
हरयक चीज़ से दिल उठाकर चले
कोई **नाउम्मेदाना*** करके निगाह
सो तुम हमसे मुँह भी छिपाकर चले
दिखाई दिये यूँ कि **बेखुद*** किया
हमें आपसे भी जुदा कर चले
जबीं* सिज़दे* करते ही करते गयी
हक़ेबंदगी* हम अदा कर चले
परस्तिश* की याँ तक कि ऐ बुत* तुझे
नज़र में सभों की खुदा कर चले
गयी **उम्र दर*** बंद **फ़िक्रेग़जल***
सो इस **फ़न*** को ऐसा बड़ा कर चले
कहें क्या जो पूछे कोई हमसे 'मीर'
जहाँ में तुम आये थे क्या कर चले।

हक़ेबन्दगी अदा करते हुए,
आपका सस्नेह
ग.मा.मु.

हमारा दफ्तर
30.10.45
प्रिय नेमि बाबू,

सहसा आपकी याद आ रही है, **मीठी बयार के औचक जगाने वाले झोंके-सी**। जैसे जाग उठा हूँ अपनी समस्त चेतना लेकर। समस्त चेतना अपने **अंतर्विश्व*** की। मन के वे ज्ञान के और प्रेम के झिल-मिलाते स्वप्न, हृदय की अनुभूतियों के विकास के स्रोत क्षण-भर के लिए जग उठे हैं। अभी क्षण-भर के बाद ही वे सो जायेंगे और धुँधली ज़िंदगी का मटमैला स्पर्श उन्हें सुला देगा कि सहसा आपका ख्याल आ गया।

याद है, आपकी बहुत बड़ी ज़िम्मेदारी है। आपने एक व्यक्ति के साथ नाज़ुक खेल खेला है। उसे कम्यूनिस्ट बनाया, **दुर्धर्ष*** घृणा के **उत्ताप*** से पीड़ित। और उसकी स्त्री के प्रति उसका रूख पलटा। अधिक सहनशील भावनामय उसे बनाया। यह काम बहुत बड़ा ही नहीं, नाज़ुक भी है।

और इन क्षणों में, जीवन के विचित्र तर्क-प्रवाह के द्वारा, आज, जबकि क्षणभर के लिए ही सही, मैं जाग्रत हो उठा हूँ तो सहसा यह वाक्य निकल आता है - Lo, there is born a man with a disturbed soul – disturbed with the highest desires of age and the greatest weaknesses of his times*. हाँ, मैं अपने को यही समझता हूँ। इस विशाल व्यक्तिवाद की विशालतम tragedy* को शब्द-बद्ध कर सकूँ तो मेरा जीवन-कार्य समाप्त हो जाएगा। क्योंकि न सिर्फ़ मैं अपनी राह को खोजता हूँ बल्कि वह भी मुझे खोजती है, और इसी में सारी उलझन की

बदमाशी है।

दैनिक जीवन के पूर्ण रूप से आबद्ध कार्यक्रम में आदर्शवाद की बू तक नहीं रहती। कहीं मन का विस्तार नहीं हो पाता। और सहसा like a flash* याद आ गया कि विवाहित जीवन का आदर्शवाद मनुष्य की समस्त चेतना को सुलाने का काम करता है। इस आदर्शवाद के विरूद्ध मैं तर्क के द्वारा बग़ावत नहीं कर पाता, परंतु मैं सोचता हूँ कि मन के सारे अधूरेपन, व्यक्तित्व के सारे बौनेपन की जड़ यहीं है। ज़िंदगी के एंजिन के लिए लोहे की पटरी यानी विवाहित जीवन। दिन-भर अधिक प्रयास का frustration* और रात में बे-आराम, सपनों में टूटती-जुड़ती ज़िंदगी। अब बतलाइए, मनुष्य का वास्तविक सामर्थ्य और उसकी शक्ति - जिसकी कमी मैं अपने अंदर कभी नहीं अनुभव करता हूँ, मात्र सो जाती है। शरीर और मन दोनों को चैन कहाँ?

फिर अध्ययन और लेखन की वह चिंतनशील मादकता, और राजनीति का वह उत्साह जैस क़ाफ़ूर हो जाता है। मन में एक द्वंद्व होने लगता है - पारिवारिक loyalty और आंतरिक विकास-बुद्धि में। इन दोनों में मानो सामंजस्य होने वाला ही नहीं। और मैं अपने से, ज़िंदगी से और इस विश्व से नाराज़ हो उठता हूँ।

किंतु आज सहसा मैं अपनी जगह आ गया था, क्षणभर के लिए ही सही, मैं अपने से चेतन हो उठा। मेरी ज्ञान-तृषा*, सौंदर्य-भक्ति तथा मुक्त हृदय-दान तथा स्वानुकूल* कर्मण्य-शक्ति* का मानो मुझे, क्षण-भर के लिए ही सही, बोध हो गया जिसकी आग अभी-अभी राख हो जायेगी। जिस ज़िंदगी को जीने का मुझे आदेश मिला है, वह कुछ दूसरी ही थी। यह नहीं। परंतु, फिर भी, यही चाहता हूँ कि मैं इस दलदल को भी पार कर जाऊँ। सचमुच मुझे ज़िंदगी की तब्दीली की बहुत बड़ी ज़रूरत है।

फिर भी नैराश्य के गीत लिखना मैंने बंद-सा कर दिया है। और जो भी चमकीले गीत मैंने इधर लिखे हैं उनमें मात्र क्षोभ* और उत्ताप की अग्नि-लताएँ* हैं। इन नये गीतों से भी मैं नाराज़ हूँ, और आधुनिकतावाद के गीतों में भरी हुई सर्दी की ठिठुरन से तो अब ऊब उठा हूँ।

परंतु आज की वास्तविक परिस्थिति के आदर्शवाद को सही समझते हुए भी बार-बार लगता है कि जब तक मैं अपने को पूर्ण रूप से स्वतंत्र नहीं कर लेता, और अपना तन-मन-धन एकाग्र नहीं कर लेता तब तक ज़िंदगी गधे की चाल में चलती रहेगी। रहेगी न?

आपका पत्र न आना एक विपत्ति ही है। फ़ुरसत का अभाव तो हम-आपको है ही। परंतु कभी-कभी जब मन बहक जाय, मुझे याद कर लिया करना। जैसा कि मैं आपको कर लिया करता हूँ।

देखिए, मैं न मालूम क्या-क्या कह गया और मुझे डर लगने लगा है कि कहीं आपको मैं सता न बैठूँ। पता नहीं क्यों, पर आपसे संकोच ज़रूर होता है। जैसे सारी बातें कह जाऊँ तो आपके मन पर प्रतिकूल परिणाम हो। कभी-कभी अविवेकपूर्ण तर्क उठने लगते हैं आपके बारे में। लगता है कि जैसे आप खुलते ही बंद हो जाते हैं। जैसे कि हम एक-दूसरे से झेंपते हैं, खिंचे चले आते हैं, पर दूर भागने की तैयारी करके, अवचेतन रूप से निस्संदेह। पता नहीं क्या बात है! पर अंदर की उष्ण मदिर धारा* एक दफ़ा फिर खुल ज़रूर जाती है और मन के सारे पाप गलकर धुल जाते हैं। इससे अधिक और क्या कोई चाह सकता है।

श्रीपतराय जी की बातचीत से पता चला - मैंने सूँघा - कि आप मेरे बारे में उत्सुक - यदि कहूँ चिंतित तो ठीक होगा - रहते हैं। पर क्या याद है आपको कि आपने कोई विस्तृत चिट्ठी नहीं भेजी है?

साँझ हो रही है। पुराने मकानों की वीरान छतों और उड़े रंगों की दीवारों से ढलती हुई। घर की मीठी सुगंध यहाँ तक आ-सी रही है। और चाहता हूँ कि पैर चलने लगे।

मेरा पत्र अब सम्पूर्ण हुआ चाहता है आधी बात ओठों में दबाकर। और पूरी बात 'फिर कभी' के लिए रखें। इसके पहले कि प्रणाम करूँ -

याद आती है तुम्हारी तैरती सी,
राह से जिस
कभी कोई आ नहीं सकता
न माता, पुत्र या पत्नी, पिता।

मेरी बेसब्र* बेक़ाबू ज़िंदगी जब किसी की ज़रूरतमंद हो उठती है तो पहले वह आपको ज़रूर याद कर लिया करती है, ध्यान न देते हुए, मात्र अवचेतन रूप से।

कहते हैं जो कहता है वह करता नहीं है, यानी ये बातें कहने की नहीं। पर मन है कि कर बैठता है, ज़िंदगी है कि जी बैठती है। श्री रेखा बाई को प्रणाम।

बस अभी इतना ही।

सस्नेह आपका
ग.मा.मु.

14.6 मुक्तिबोध के पत्रों का सार

आपने मुक्तिबोध के इन पत्रों को ध्यान से पढ़ा होगा। ये पत्र हिंदी के प्रसिद्ध कवि गजानन माधव मुक्तिबोध ने अपने साथी कवि और आलोचक नेमिचंद्र जैन को लिखे थे। मुक्तिबोध ने ये पत्र क्रमशः 26 अक्टूबर,1945 और 30 अक्टूबर, 1945 को बनारस से लिखे थे। पत्र उन्होंने सरस्वती प्रेस के कार्यालय में बैठे-बैठे लिखे थे।

पत्र में मुक्तिबोध ने कोई भूमिका नहीं बनायी। शुरुआत में नेमिचंद्र जैन द्वारा पत्र न भेजने की शिकायत करते हुए मुक्तिबोध ने उनके प्रति अपने अपनत्व भाव को प्रदर्शित किया। एक चिंतनशील व्यक्ति की तरह मुक्तिबोध ने प्रेम और कर्त्तव्य के द्वंद्व को सामने रखा और स्पष्ट किया कि कर्त्तव्य ही सब कुछ नहीं है। यहाँ तक कि उसकी अधिकता से मनुष्य का हृदय संकुचित हो जाता है। इसलिए कर्त्तव्य के भार से कभी-कभी मुक्त हो जाना चाहिए। मुक्तिबोध ऐसी मुक्ति की कामना करते हैं। फिर अपने लेखन के बारे में सूचना देते हैं कि कविताओं को सुधारने में उनका बहुत सारा समय निकल जाता है। फिर थोड़ा-सा उपालम्भ देकर मुक्तिबोध नेमि बाबू के लिए अपनत्व भाव को प्रकट कर देते हैं।

वे पत्र में बनारस छोड़ने की इच्छा प्रकट करते हैं ताकि कार्य की एकरसता से मुक्ति मिले। उन्होंने अपने निजी जीवन की पीड़ा को भी अभिव्यक्त किया है, जब उन्होंने लिख दिया कि 'शादी' और 'घर गृहस्थी' का जंजाल उन्हें कितना कष्टकर लग रहा है। जिस 'घर-गृहस्थी' को अधिकतर लोग अपने जीवन का आदर्श मानते हैं, वहाँ मुक्तिबोध मानते हैं कि इसके कारण आदमी 'सोलह-आना गधा हो जाता है।' अपने स्वयं की मानसिकता पर भी टिप्पणी करते हुए मानो हँसते हैं कि अभी इस 'फलसफा' को पूरा न मानने के कारण बीच-बीच में मैं विद्रोह कर बैठता हूँ।

अपने कविता न लिखने, या कविता लेखन में की गयी मेहनत का वर्णन करते हुए मुक्तिबोध अपने कविता-संग्रह की भूमिका लिखने का अनुरोध भी कर देते हैं। फिर अपने घर-परिवार की जानकारी देते हुए और उनके परिवार के बारे में जानकारी देते हुए एक उर्दू कविता को उद्धृत करते हुए पत्र को समाप्त कर देते हैं।

अगला पत्र फिर नेमि बाबू की याद में लिखा गया है। नेमिचन्द्र जैन ने मुक्तिबोध के जीवन में जो महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उसे दोहराते हुए उन्होंने लिखा :

> 'याद है, आपकी बहुत बड़ी जिम्मेदारी है। आपने एक व्यक्ति के साथ नाजुक खेल खेला है। उसे कम्युनिस्ट बनाया, दुर्धर्ष घृणा के उत्ताप* पीड़ित उसकी स्त्री के प्रति उसका रुख पलटा। अधिक सहनशील भावनामय उसे बनाया।'

यह आभार प्रकट करने के बाद मुक्तिबोध फिर चिंतन के क्षेत्र में चले गये और 'विवाहित जीवन के आदर्शवाद' के विरुद्ध तर्क देने लगे। इसके कारण मनुष्य की सर्जनात्मक कल्पना क्षीण हो जाती है। इस चिंतन को वे अपने जीवन की पीड़ा का निष्कर्ष मानते हैं और प्रयास करते हैं कि इससे मुक्त होकर जीवन जी सके। फिर नेमिबाबू की आ रही याद, उनके पत्र न मिलने की शिकायत और अपने दुख-दर्द को प्रकट करके वे अपना यह लम्बा-पत्र समाप्त कर देते हैं।

14.7 मुक्तिबोध पत्रों का विश्लेषण

इन पत्रों को पढ़कर आपने महसूस किया होगा कि मुक्तिबोध ने ये पत्र अपने अत्यंत आत्मीय और विश्वसनीय मित्र को लिखे हैं। ऐसा मित्र, जिसके सामने अपने मन की वास्तविक भावनाओं और जीवन के छोटे-मोटे दुख-दर्द को आसानी से अभिव्यक्त किया जा सकता है। लेखक के मन में ऐसा विश्वास है कि इन पत्रों के माध्यम से कोई गलतफहमी नहीं होगी, पाठक (पत्र प्राप्तकर्ता नेमिबाबू) लेखक (मुक्तिबोध) को कभी अपमानित नहीं करेंगे, उसे हेय दृष्टि से नहीं देखेंगे, बाद में इन्हीं बातों के कारण व्यंग्य नहीं करेंगे। लेखक को यह विश्वास है कि पाठक (नेमिबाबू) उनसे अधिक समझदार हैं। वे उन्हें कुछ रास्ता दिखा सकेंगे। पहले भी उन्होंने ही रास्ता दिखाया है। यह विश्वास और आश्वस्ति इन लम्बे पत्रों में झलकती है।

14.7.1 कथ्य

पत्रों में आमतौर से कोई भूमिका नहीं होती। उसके लेखन की यह विशेषता होती है कि उसका आरंभ ही 'मूल बात' से होता है। इसके अलावा एक पत्र में कई बातें एक साथ होती हैं। ऐसा नहीं होता कि एक पत्र में केवल एक ही तरह की बातें लिखी जाये। अनेक परस्पर असम्बद्ध बातें एक ही पत्र में आ सकती हैं। कभी देश दुनिया की चिंता, कभी अपने लेखन की समस्याएं और कभी पारिवारिक सुख-दुःख - सभी कुछ एक साथ एक पत्र में शामिल हो सकता है। आपने देखा होगा कि इन पत्रों में भी कई तरह की बातें एक साथ आ गयी हैं। एक से दूसरी बात पर लेखक आराम से चला जाता है और जब मन करता है, वापिस पहले वाली बात पर आ जाता है। पुनरावृत्ति आ रही हो, तो भी पत्र लेखक को कोई चिंता नहीं होती।

जब लेखक अपने चिंतन के निष्कर्षों को निबंध या लेख में औपचारिक रूप से लिखता है तो उसमें एक तारतम्य होता है। जिस समय मस्तिष्क में ऐसे विचार पनप रहे होते हैं, उस समय डायरी, पत्र आदि अनौपचारिक गद्य-विधाओं में ये विचार अपरिष्कृत एवं मौलिक रूप में अभिव्यक्ति पा सकते हैं। मुक्तिबोध के चिंतन के कुछ बिंदु सूत्र रूप में इन पत्रों में भी प्रकट हुए हैं। वे मध्यवर्गीय 'पारिवारिक आदर्शवाद' की आलोचना करते हैं।

पत्र में लेखक अपने निष्कर्ष नहीं देता। वह एक तर्क देता है, अनुभव का एक अंश प्रस्तुत करता है। फिर उसकी पुष्टि या खंडन चाहता है, ताकि उसी के अनुरूप अपने चिंतन को सुस्पष्ट कर सके या उसे व्यवस्थित कर सके। इसलिए उसमें चिंतन के कुछ कण आ जाते हैं। हालांकि दार्शनिक चिंतन को प्रकट करने के लिए पत्र उपयुक्त विधा नहीं है। पत्र में तो निजी सुख-दुख की अभिव्यक्ति होती है, जो कि इन पत्रों में भी हुई है।

आपने यह भी देखा होगा कि मुक्तिबोध ने इन पत्रों में 'तथ्य' बहुत कम लिखे हैं - अधिकतर अपनी भावनाओं और चिंतन को प्रकट किया है। आत्माभिव्यक्ति की बैचेनी आपको इन पत्रों में दिखी होगी, जोकि साहित्यिक पत्रों की अपनी विशेषता है।

14.7.2 भाषा-शिल्प

मुक्तिबोध के इन पत्रों की भाषा पर आपने गौर किया? क्या लगा आपको ? यही न कि मुक्तिबोध ने बड़े उन्मुक्त ढंग से पत्र लिखा है। कहीं-कहीं व्याकरण के नियमों की परवाह नहीं की है। पहले पत्र की पहली ही पंक्ति पढ़िए --'आपका पत्र नहीं।' पत्र लेखन में लेखक अक्सर वाक्यों को अधूरा छोड़ देते हैं। पत्र-लेखक और पाठक के बीच इतनी अच्छी समझ होती है कि वह संदर्भ से ही अधूरे वाक्य का अर्थ समझ लेता है।

पत्र लिखते समय मुक्तिबोध कभी कविता तो कभी कहानी की शैली अपना लेते हैं। कभी निबंध का स्वरूप भी सामने आता है। बीच-बीच में संवाद भी आते हैं। यानी कहानी, कविता, निबंध, नाटक सब इसमें एक साथ घुले-मिले हैं। 'मैं' शैली तो पत्र की अहम विशेषता है।

मुक्तिबोध ने अंग्रेजी, संस्कृत (तत्सम), उर्दू शब्दों का इस्तेमाल किया है। कुछ पारिभाषिक शब्द भी हैं। इस प्रकार मुक्तिबोध ने इन पत्रों के जरिए अपना संपूर्ण व्यक्तित्व उड़ेल कर रख दिया है। मन की मौज न केवल पत्र के कथ्य में मौजूद है बल्कि भाषा भी उसी प्रवाह में लिखी गई है। पत्र की भाषा की जिस 'सहजता' की बात हमने की थी वह 'सहजता' मुक्तिबोध के पत्रों में मौजूद है। कहीं भाषा अस्तव्यस्त नजर आती है, तो कहीं भाषा का सधा रूप सामने आया है। यही पत्र लेखन की विशेषता है।

बोध प्रश्न-2

1. मुक्तिबोध ने यह पत्र किस मौसम में लिखा है? जिन पंक्तियों में मौसम का उल्लेख है उन्हें यहाँ लिखिए।

   .....

   .....

.....
.....
.....

2. मुक्तिबोध अपनी तुलना गधे से क्यों करते हैं?

.....
.....
.....
.....
.....

3. मुक्तिबोध अपनी हिंदी सुधारने के लिए क्या करते हैं?

.....
.....
.....
.....
.....

4. मुक्तिबोध ने अपने पत्र में किन-किन साहित्यकारों का नामोल्लेख किया है?

.....
.....
.....
.....
.....

5. 'आपका पत्र न आना एक विपत्ति है' लेखक ऐसा क्यों कहता है?

.....
.....
.....
.....
.....

6. लेखन ने किस कवि का शेर उद्धृत किया है।

.....
.....
.....
.....
.....

14.8 सारांश

इस इकाई में आपने साहित्यिक विधा के रूप में पत्र की विशेषताओं की जानकारी प्राप्त करने के साथ-साथ श्री नेमिचन्द्र जैन के नाम लिखे मुक्तिबोध के पत्रों वाचन का और विश्लेषण भी किया। अब आप यह समझ और जान चुके हैं कि पत्र लिखित संप्रेषण है। निजता, आत्माभिव्यक्ति, तात्कालिकता और सहजता इसके गुण हैं। मुक्तिबोध के दोनों पत्रों में पत्र के गुण मौजूद हैं। आत्मकथा, संस्मरण, डायरी आदि पत्र से मिलती जुलती गद्य विधाएँ हैं जिसमें लेखक अपने को खुल कर निस्संकोच भाव से व्यक्त करता है। परंतु पत्र ही एकमात्र ऐसी विधा है जिसमें लेखक किसी खास पाठक के लिए पत्र लिखता है और जब उसे पत्र का उत्तर मिलता है तो वह भी पाठक बन जाता है। इस प्रकार पत्र में लेखक पाठक बन जाता है पाठक लेखक बन जाता है। यह प्रक्रिया लगातार चलती रहती है।

पत्र अत्यंत निजी अभिव्यक्ति है। परंतु जब कोई बड़ा साहित्यकार, मनीषी, कलाकार, राजनैतिक नेता किसी को पत्र लिखता है तो उसमें साहित्य, कला, राजनीति और पूरे समाज और जीवन से जुड़े बड़े सरोकार झलकते हैं। यही सरोकार पत्र को 'निजपन' के दायरे से बाहर निकालते हैं और वह पत्र मामूली पत्र न रहकर साहित्य का हिस्सा बन जाता है। मुक्तिबोध के पत्रों को पढ़कर आपने महसूस किया होगा कि इसमें केवल लेखक के सुख-दुख की अभिव्यक्ति नहीं है बल्कि इसमें कवि, साहित्य, कर्तव्य, जीवन आदि अनेक प्रश्नों से जूझता नजर आता है। यही बड़े प्रश्न इन पत्रों को 'सहित्यिक' बनाते हैं। इनकी शैली भी 'साहित्यिक' है। कभी कविता आती है तो कभी लेखक कहानी सुनाने के मूड में आ जाता है। कभी दार्शनिक अंदाज अपना लेता है तो कभी हास्य विनोद का सहारा लेता है। कुल मिलाकर इन दोनों पत्रों में साहित्यिक लालित्य है जिसका आस्वादन आपने किया होगा।

14.9 शब्दावली

अंतर्विश्व	:	मन या हृदय की दुनिया
अग्नि लताएँ	:	आग की लपट
उत्ताप	:	दुःख, क्लेश
उष्ण मदिर धारा	:	गरम मदभरा प्रवाह
कर्मण्य शक्ति	:	सक्रियता, कार्यनिष्ठा,
क्षोभ	:	व्याकुलता, रोष
ज़बान बंदी	:	लिखा हुआ वक्तव्य
जबीं	:	माथा
जीर्ण	:	पुराना, जर्जर, ढहता हुआ
ज्ञान-तृषा	:	ज्ञान की तीव्र इच्छा
दर	:	दरवाजा
दुर्धर्ष	:	जिसे हराया न जा सके
ना उम्मेदाना	:	निराशा
पत्र-संभार	:	पत्रों का समूह
परस्तिश	:	पूजा
फकीराना	:	फकीरों की तरह
फन	:	गुण, कला
फिक्रे गजल	:	गजल की चिंता
बुत	:	मूर्ति
बेखुद	:	जो अपने आप में न हो
बेसब्र	:	असंतोष
सिजदे	:	प्रणाम, नमस्कार
स्वानुकूल	:	अपने अनुकूल
हकेबंदगी	:	अधिकार के साथ वेदना
Charge	:	मूल्य, दाम
Frustration	:	निराशा, क्षोभ
Irrational	:	असंगत
Lady of the dark	:	बर्नाड शॉ का नाटक 'द लेडी ऑफ द सानेट्स'
Like a flash	:	चमक की तरह
'Lo, ... his time'	:	देखो, एक ऐसा आदमी भी है जिसकी आत्मा बेचैन है; वह अपने युग की सबसे बड़ी महत्वाकांक्षा और अपने समय की सबसे बड़ी कमजोरी से त्रस्त है।
Nonsensical	:	बेहूदा
Petit-bourgeois	:	निम्न मध्य वर्ग
Tragedy	:	त्रासदी, विपत्ति

14.10 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश-1

1. औपचारिक पत्रों में तथ्यों का सम्प्रेषण होता है। इसका एक निश्चित विधान होता है। अनौपचारिक पत्र में लेखक अपनी निजी मानसिक प्रतिक्रिया व्यक्त करता है। औपचारिक पत्र में व्यक्ति का निजी व्यक्तित्व महत्वपूर्ण नहीं होता। अनौपचारिक पत्र में निजता का विशेष महत्व होता है। (देखिए भाग 14.2)
2. ख
3. (क) लिखित संप्रेषण (ख) निजता (ग) आत्माभिव्यक्ति
   (घ) तात्कालिकता (ङ) सहजता (देखिए भाग 14.3)
4. आत्मकथा, संस्मरण, डायरी (देखिए 14.4)
5. डायरी और पत्र के जरिए लेखक अपने मन की बातें सामने रखता है। दोनों तात्कालिक लेखन है। दोनों एक बैठक में लिखे जाते हैं। (देखिए 14.4.3)

बोध प्रशन-2

1. जाड़े का मौसम ; पहले पत्र का तीसरा पैरा ध्यान दे पढ़िए।
2. मुक्तिबोध घर-गृहस्थी, विवाह, दुनियादारी को बोझ मानते हैं। उन्हें ये बलाएं लगती हैं। उनका मानना है कि विवाह करते ही आदमी शक्तिहीन, सामर्थ्यहीन और बेवकूफ हो जाता है। इसीलिए वे लिखते हैं 'घर-गिरस्ती भी एक बला है, जिसके दो सींग हैं, जो गधे के होते हैं। बाल-बच्चेदार आदमी सोलह आना गधा होता है।'
3. हिंदी सुधारने के लिए मुक्तिबोध हिंदी के मुहावरे, कहावतें, लिखा हुआ वक्तव्य आदि नोट कर लेते हैं। वे अपनी हिंदी भाषा को सुंदर बनाने का सायास प्रयत्न करते हैं। वे अपनी हिंदी भाषा को कृत्रिम नहीं बल्कि सहज बनाना चाहते हैं।
4. बर्नाड शॉ, अज्ञेय, भूषण जी (भारत भूषण अग्रवाल), श्रीपतराय
5. इस पंक्ति से मुक्तिबोध की नेमिचन्द्र जैन के प्रति आत्मीयता और लगाव का पता चलता है। पत्र शून्यता को भरने, मन को सुकून पहुँचाने, अपनों के पास पहुँचने का जीवंत माध्यम है। मुक्तिबोध के पत्र में नेमि जी के प्रति उनका स्नेह, लगाव और आम्तयता कूट-कूट कर भरी हुई है। यह पंक्ति इसी आत्मीयता का प्रकाशन है।
6. यह मीर की गजल है। अंतिम दो पंक्तियाँ देखें। मीर ने अपना नामोल्लेख किया है। उर्दू शायरी में इसे मक़ता कहते हैं। इस कविता को उद्धृत कर मुक्तिबोध ने नेमि जी के प्रति अपनी आत्मीयता जताई है।